P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# राष्ट्रनिर्माण व चरित्र निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका

**रेणु सिंगोदिया**
अनुसंधित्सु
हिन्दी विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

**सारांश**

बालक देश की आधारशिला है इसकी समुचित शिक्षा, सांवेगिक व बौद्धिक विकास पर ही देश का विकास संभव है। प्रारम्भ से ही इन्हें राष्ट्रीय, जनतांत्रिक मूल्य आधारित शिक्षा देने की आवश्यकता पड़ती है, जिससे एक जागरूक नागरिक के रूप में इनका उत्तरोत्तर विकास हो। इस दिशा में बाल–साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसके द्वारा बालकों में स्वस्थ संस्कार प्रतिस्थापित हो सकें। अनुशासन, मर्यादा, व्यवस्था की नींव बचपन में ही उचित बाल साहित्य द्वारा निर्मित की जा सकती हैं।

''तुम उन्हें अपना प्यार दे सकते हो, लेकिन विचार नहीं, क्योंकि उनके पास अपने विचार होते हैं, तुम उनका शरीर बंद कर सकते हो, लेकिन उनकी आत्मा नहीं, क्योंकि उनकी आत्मा आने वाले कल में निवास करती है, उसे तुम नहीं देख सकते हो, सपनों में भी नहीं देख सकते हो, तुम उनकी तरह बनने का प्रयत्न कर सकते हो, लेकिन उन्हें अपने जैसा बनाने की इच्छा मत रखना, क्योंकि जीवन पीछे की ओर नहीं जाता और न ही बीते हुए कल के साथ रूकता ही है।'' बालमनोविज्ञान व बच्चों में विश्वास दर्शाने वाली यह उक्ति खलील जिब्रान की हैं। बालसाहित्यकार इस बात को ध्यानतव्य रखते हुए साहित्य सर्जन करेंगे तो बच्चों के सामने आदर्श होंगे और उनके कल्पना जगत को और अधिक तेजोमय बनाने के उपक्रम होंगे। यह कार्य बाल साहित्य से ही संपन्न हो सकता है।

**मुख्य शब्द :** सकारात्मक, उत्प्रेरित, अभ्युत्थान, नवनीत।

**प्रस्तावना**

जिस प्रकार कोई बच्चा समाज के निर्माण का बीज रूप होता है, उसी प्रकार बाल साहित्य भी बालकों को संस्कार और विचार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह बालकों की प्रारंभिक अवस्था से ही उनके मन, विचार और कल्पना को परिमार्जित करते हुए समाज और राष्ट्र के भावी स्वरूप की पृष्ठभूमि तैयार करता है। आज बच्चों का जीवन मोबाइल, इंटरनेट गेम आदि की ओर ही घूमता नजर आता है। वे पत्र–पत्रिकाओं, किताबों से दूर होते जा रहे है। उनकी रूचि गेम डाउनलोड करने व देखने तथा यू–ट्यूब पर वीडियो देखने में ज्यादा है पुस्तकों के प्रति उनकी रूचि घट रही है। यह इस दौर की सबसे बड़ी चुनौती है। ऐसे में बाल साहित्यकारों का दायित्व बढ़ जाता है। बच्चों के बिना घर–संसार, देश–दुनिया सूनी–सूनी सी है। बच्चों से ही कल हैं इस कारण भावी पीढ़ी के चरित्र–निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

बाल साहित्य ही बच्चों के भविष्य का निर्माता है। इस बात को चाचा नेहरू ने भी स्वीकार किया था। बाल साहित्य का मूल उद्देश्य कुरीतियों तथा सभी प्रकार की बुराइयों से हटकर स्वस्थ, सुंदर और आनन्दमयी जीवन जीने की कला सिखाना है जिससे बच्चों का दृष्टिकोण सकारात्मक हो न कि नकारात्मक। इसी संदर्भ में हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम आजाद जी का उदाहरण बच्चों के लिए सहायक सिद्ध होगा। आजादी, आत्मबल और विकास को अपनी ताकत मानने वाले कलाम बचपन से ही ख्वाबों के जरिए अपनी योजनाओं की शुरूआत करते फिर उन्हें एक सच के रूप में दुनिया के सामने खड़ा कर देते थे। बाल्यावस्था जीवन के प्रासाद की आधारशिला है। बालकों के व्यक्तित्व के सतत् विकास में श्रेष्ठ–साहित्य की महती भूमिका रही है। बालक मानव–जीवन के विटपों की नन्हीं पौध है। बालसाहित्य इसी पौध की जड़ों को सशक्त बनाने का प्रमुख साधन है।

अंग्रेजी की कहावत 'चाइल्ड इज फादर ऑफ द मेन' अर्थात् बच्चा मनुष्य का जनक होता है का आशय है कि बच्चे में मनुष्य की समस्त संभावनाएँ छिपी रहती है। उसे जिस सांचे में ढालना चाहे ढाल सकते है।

सांचे का कार्य साहित्य बखूबी करता है। चारित्रिक दृढ़ता लाने का सर्वोत्तम माध्यम बाल साहित्य ही है। भारतीय आचार्यों ने बालक को उस बीज समान माना है जो समय के साथ–साथ पल्लवित, पुष्पित एवं फलित होकर न केवल छाया देगा, वरन् कई प्रकार से समाज का कल्याण भी करेगा इसलिए बालकों का जीवन ज्योतिर्मय हो, सत्यं शिवम् सुन्दरम से समन्वित हो की कल्पना की गयी है। बच्चों के हृदय की कोमलता और मन की सच्चाई को बनाये रखना हमारा प्रथम मुख्य कर्त्तव्य है। समाज रूपी बगिया का सौन्दर्य ये बच्चे ही है इसलिए बच्चों के प्रति सदैव सजग रहने की आवश्यकता है। मुस्कराते बच्चें समृद्धशाली देश की पहचान होते हैं। बाल्यावस्था मानव जीवन की महत्त्वपूर्ण अवस्था है। बालक ही बड़े होकर देश के निर्माता बनते है। पाल हैजार्ड ने लिखा है, "पुस्तकें वे ही अच्छी होती हैं जो बच्चों को बाह्य ज्ञान ही नहीं बल्कि अंतर्ज्ञान भी दे सकें, एक ऐसा सरल सौंदर्य दे सकें जिसे वह सरलता से ग्रहण कर सकें और बच्चों की आत्मा में ऐसी भावना का संचार करें जो उनके जीवन में चिरस्थायी बन जाये। वे सार्वलौकिक जीवन के प्रति उनके मन में आस्था उत्पन्न करें और खेल की महत्ता तथा साहस के प्रति आदर जाग्रत करें।" बच्चे हमारी साँस की तरह है इसलिए बच्चों के स्वतंत्र व्यक्त्वि, उसके बहुमुखी विकास को लेकर गहरा विचार, विशेष रूप से पिछली सदी से होता आ रहा है। जैस–जैसे सदियों से परतंत्र रह रहे देश आजाद होते गए और नव जागरण के प्रकाश से जगमगाते गए वैसे–वैस बच्चे की ओर भी अपेक्षित ध्यान जाने लगा। राष्ट्र के निर्माण के लिए बच्चों के चतुर्दिक विकास को आवश्यक समझा गया। इसमें बाल साहित्यकारों की अहम भूमिका रही है। और इसके विकास में भी बाल साहित्यकार पूरी तरह समर्पित नज़र आ रहे है। शुरू के वर्षो में बच्चों में जो आदत पड़ जाती हैं और बच्चे जिस तरह सोचने लगते हैं, उसका सारे जीवन पर असर पड़ता है। इसलिए बच्चों पर अधिक ध्यान देते हुए इसके लिए राष्ट्रीय नीति तय की जानी चाहिए। शम्भू जी ने संकेतित किया, "मेरे बाल साहित्य का मूल ध्येय है बच्चों को चरित्र–निर्माण के लिए प्रेरित करना, जीवन जीने के कला सिखाना, भारतीय धर्म और संस्कृति के ज्योतिर्मय तत्त्वों से परिचित कराना, राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति के प्रति नैतिक कर्त्तव्यों का बोध कराना तथा ज्ञान–विज्ञान के आश्चर्य लोक का भ्रमण कराना।" राष्ट्रीयता और देश प्रेम सर्वोपरि तत्त्व हैं। इनके प्रभाव से देश के लिए व्यक्ति सब कुछ न्यौछावर करने को उद्यत हो जाता है। स्वामी विवेकानन्द का एक उदाहरण इसी प्रकार का है–''जब वे जापान भ्रमण पर गए तो एक जापानी से कहा यदि गौतमबुद्व को अपशब्द कहूँ तो तुम क्या करोगे? वह व्यक्ति बोला–''मैं आपका सर धड़ से अलग कर दूँगा।'' विवेकानन्द ने कहा–''और यदि गौतमबुद्ध जापान को अपशब्द कहें तो।'' इस पर उस जापानी ने कहा–''मैं गौतमबुद्ध का सर धड़ से अलग कर दूँगा।'' तात्पर्य हुआ कि राष्ट्रीयता सर्वोपरि है। राष्ट्र स्वयं में एक धर्म हैं। कोई भी राष्ट्र जब तक मजबूत नही हो सकता, जब तक उसके बच्चे अपने देश के इतिहास और रीति–रिवाजों की जानकारी नहीं रखते। अपने अनुभवों को नहीं लिख सकते और विज्ञान तथा गणित के बुनियादी सिद्धातों की समझ नही रखते। इसलिए बच्चे में एक वैज्ञानिक दृष्टि को विकसित करते हुए अपने इतिहास रीति–रिवाजों आदि की आवश्यक जानकारी देनी होती है जो बाल साहित्य द्वारा आसानी से दी जा सकती है। किसी भी देश का साहित्य उसके सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिंब है तो उसका बाल साहित्य भी राष्ट्रीय जीवन का अंग है। बच्चों में वह अंकुर छिपा होता है जो भविष्य में एक महान वृक्ष के रूप में विकसित होकर संपूर्ण विश्व को सुंदर फल, आश्रय, संरक्षण एवं शांति प्रदान करता है। आने वाले समाज के विचार और व्यवहार का स्तर इस बात पर निर्भर है कि हम इस समय बालकों को घटिया दर्जे का साहित्य देते है या ऊँचे दर्जे का। उत्तम दर्जे का बाल साहित्य एक कुम्हार की भाँति बच्चों के संस्कारों की संपुष्टता प्रदान करता है, एक स्वप्न देता है। बच्चों को स्वस्थ मानसिकता वाले विचारवान व्यक्ति का रूप देता है । उनकी शिक्षा और संस्कार की पृष्ठभूमि को सुदृढ़ करता है। जो आगे चल कर राष्ट्र के कर्णधार बनेंगे।

''सत्य अहिंसा परमोधर्मा, का ही पाठ पढ़ेगे।
बापू का सपना हो सच्चा, सब मिल साथ बढ़ेगे।
तपोव्रती मुनि ज्ञानी ध्यानी, गौतम बुद्ध महान बनेंगे।
हम भारत की शान बनेंगे।''

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. देश समाज के लिए बाल साहित्य की अनिवार्यता को बताना।
2. बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों में बेहतर और सकारात्मक संवाद की क्षमता विकसित की जा सकती है।
3. बाल–साहित्य से बच्चें में सकारात्मक ऊर्जा आती है और देश–समाज के लिए कुछ करने का भाव पैदा होता की जानकारी देना।
4. अच्छा नागरिक बनने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता होती है। वे गुण बाल मनोभूमि में अंकुरित हो सकते को बताना।

**अध्ययन पद्धति**

वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक।

**निष्कर्ष**

अतः एक समृद्ध एवं सुखी राष्ट्र के लिए बच्चों का स्वस्थ एवं संस्कारित होना आवश्यक है। यदि हम बच्चों को स्वस्थ संस्कार नहीं दे पाएँगे तो समाज धीरे–धीरे विघटित होता जाएगा। बाल मन के भोलेपन को बनाये रखते हुए बच्चों में उचित–अनुचित के प्रति विवेकशक्ति जाग्रत करने में ही बच्चों का कल्याण, राष्ट्र का कल्याण और बाल साहित्य की सार्थकता निहित है। बाल सहित्य की रचनाएँ नवनीत की तरह, सुकोमल बाल हृदयों में भावी ज्ञान–विज्ञान रूपी वृक्षों को पल्लवित–पुष्पित एवं फलवान बनाने वाले बीज की तरह होती है। राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की ओर बालक–बालिकाओं को उत्प्रेरित करना ही बाल साहित्य का मुख्य लक्ष्य होता है। वास्तव में बाल साहित्य राष्ट्रीय अभ्युत्थान के नींव का पत्थर होता है।

1. सकारात्मक–उपयोगी, जो सार्थक हो।

2. उत्प्रेरित–प्रोत्साहित करने वाला, प्रेरणा देना।
3. अभ्युत्थान–समृद्धि, उन्नति।
4. नवनीत– नया, सुंदर।

**संदर्भ ग्रंथ सूची –**

हिंदी बाल साहित्यः एक अध्ययन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1969

बाल गीत साहित्य, निरंकार देव सेवक, उत्तर प्रदेश, हिंदी संस्थान, लखनऊ, सन् 1983

बाल साहित्य : इक्कीसवीं सदी में, जय प्रकाश भारती, अभिरूचि प्रकाशन, सन् 1995

हिंदी बाल साहित्य का इतिहास, प्रकाश मनु, मेघा बुक्स, दिल्ली, सन् 2003

हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा, डॉ. श्री प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1985

बाल साहित्य : मेरा चिन्तन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, मेघा बुक्स, दिल्ली, सन् 2002